International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 12, December 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पूर्व बाल्यावस्था तक भाषा विकास का प्रतिनिध्यात्मक विधि द्वारा अध्ययन

शोद्यार्थी : शाजिया परवीन
विश्वविद्यालय मनोविज्ञान विभाग,
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

परिचय

भाषा मनुष्य के जीवन की प्रथम आवश्यकता है जो मनुष्य के जीवन को मुख्य रूप से प्रभावित करती है। बच्चों की शिक्षा–दीक्षा तथा घरेलु जीवन में इसकी बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सामाजिक जीवन में भाषा के माध्यम से ही अपनी अभिव्यक्ति की जा सकती है। भाषा का अटूट सम्बन्ध बुद्धिमता, अधिगम और विकास से होने के नाते इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। भाषा समाज से सीखी गई वह क्रिया है जिसे व्यक्ति जन्म लेते ही किसी न किसी रूप में हावभाव द्वारा ग्रहण करता है एवं जीवन पर्यन्त स्वयं से तथा अन्य व्यक्तियों से संपर्क बनाये रखता है। भाषा के विकास का आधार ध्वनि है। लगभग एक माह की आयु में बच्चा रोने की क्रिया करने लगता है। जैसे–जैसे आयु बढ़ती जाती है उसके भिन्न–भिन्न प्रकार की ध्वनि निकालने की क्षमता भी बढ़ती जाती है और एक आयु स्तर तक आते–आते वह दूसरों के द्वारा निकाली गई ध्वनियों को समझ लेता है। इस प्रकार उसके लिए सूचनाओं का एक नया भंडार खुल जाता है और स्वयं भी इन्हीं ध्वनियों की भाँति ध्वनि निकालने में सक्षम भी हो जाता है। ये ही ध्वनियाँ भाषा कहलाती है और यही भाषा सामाजिक, बौद्धिक, शैक्षिक और संज्ञानात्मक विकास का आधार भी हैं।

यद्यपि भाषा की विभिन्नता के प्रश्न को दार्शनिकों एवं वैज्ञानिकों ने हजारों वर्ष पहले सुलझाने की चेष्टा की लेकिन भाषा संबंधी कोई भी नियम सर्वसम्मति से स्वीकार नहीं किया गया। अगर जैविकीय रूप से देखे तो पाते हैं कि सभी जीव किसी न किसी रूप में अपनी बात दूसरों तक पहुँचाते हैं किन्तु मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो बोल सकता है, जिसके पास भाषा है। इस संदर्भ में मनोवैज्ञानिकों द्वारा कुछ मुख्य अध्ययन भी हुए है। मैक्लिन (1970) ने शहद की मक्खियों के सम्प्रेषण का निरीक्षण किया तथा पाया कि उनका यह व्यवहार अपरिवर्तित है तथा साथ ही बहुत ही सीमित है। केलॉगी तथा केलॉगी (1933) ने बन्दरों को बोलना सिखाने का प्रयास किया। उसके बाद हेज (1951) ने भी बन्दरों को बोलना सिखाने

की कोशिश की। इस प्रयास में बंदरों को कुछ व्यवहारों को करना अवश्य सिखा दिया गया लेकिन भाषा बन्दरों को नहीं सिखायी जा सकी। गार्डनर तथा गार्डनर (1969) ने बनमानुषों को प्रशिक्षण देकर उन्हें तीस शब्द सिखाये। ये सभी शब्द गूंगे–बहरे लोगों के थे। प्रीमैक (1970) ने एक चिम्पैजी को प्लास्टिक के टुकड़ों के आधार पर भाषा सिखाने का प्रयास किया। इस प्रकार स्पष्ट हुआ कि भाषा विकास का मूल आधार जैविकीय है। इस संदर्भ में इ0एच0 लीनेवर्ग (1967) ने जीव संबंधी सिद्धान्त की दो वास्तविकतायें दर्शायी हैं। पहला यह कि बच्चों के भाषा विकास की एक निश्चित श्रेणी होती हैं तथा दूसरा यह कि इस निश्चित श्रेणी का मस्तिष्क के क्रियात्मक विकास से संबंध है। ओ0 एच0 मावरर (1960) ने भाषा सीखने की दूसरी पद्धति बतायी। इन्होंने पक्षियों की व्यवहारिकता को दर्शाते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि भाषा सीखी जाती है। साथ ही इन्होंने चिड़ियों पर किये गये प्रयोगों के द्वारा यह निष्कर्ष निकाला कि मानव शिशु भी पक्षियों के समान भाषा सीखता है। इन्होंने एक अन्य अध्ययन द्वारा स्पष्ट किया कि बच्चों की भाषा अनुकरण द्वारा सीखी जाती है और यह तब सीखी जाती है जब बालक तथा बालिका का विकास एक विशेष आयु स्तर तक हो चुका होता है।

ब्राउन तथा केजडेन (1969) ने तीन बालकों एडम एवं तथा सारा के बातचीत का विश्लेषण करके बताया कि बच्चों में अनुकरण और ह्रास की प्रक्रिया के आधार पर बोलना सिखता है। मार्टिन ब्रेने (1963) ने बताया कि बच्चों में भाषा का विकास अधिगम क आधार पर होता है तथा इसमें सामान्यीकरण की प्रक्रिया भी शामिल होती है। इनके अनुसार जब बच्चा कोई नया वाक्य सुनता है तो उसके आधार पर और अपने सीखे नये–पुराने शब्दों को समझकर कई नये वाक्य बनाने में सफल हो जाता है। बेन्दूरा तथा वाल्टर्स (1063) ने कहा है कि सामाजिक अधिगम के आधार पर भाषा विकास की व्याख्या की जा सकती है तथा सामाजिक अधिगम में सामान्यीकरण की प्रक्रिया भी पायी जाती है। बाद में बेन्दूरा तथा हेल्स ने अपने एक अध्ययन में शब्द के साथ नमूनों को प्रस्तुत करके बताया कि बच्चों के भाषा विकास में नमूना और अन्य सामाजिक चरों की सहायता ली जा सकती है।

भाषा विकास के अध्ययन में शब्दार्थ के विकास का अध्ययन भी आवश्यकता है। शब्दार्थ के विकास का अध्ययन भाषा एवं उसके शब्दार्थ के सम्बन्धों का ही अध्ययन है। ब्राउन (1965) ने भाषा तथा शब्दार्थ सीखने के लिए दो

उपकल्पनायें प्रस्तुत की हैं–पहला यह कि नये शब्दों का शब्दार्थ पृथक्करण और सामान्यीकरण के द्वारा सीखा जाता है। दूसरा यह कि किसी शब्द को सुनकर अनुकरण किया जाता है। वर्नर तथा कप्लान (1952) के अनुसार नये शब्दों की संख्या आयु के अनुसार क्रमशः बढ़ती जाती है।

भाषा सीखने के लिए व्याकरण की जानकारी होनी आवश्यक है, जिसे दो भागोंमें विभाजित किया जाता है। पहला वाक्य विन्यास : यह वाक्य बनाते समय शब्दों को जोड़ने की प्रक्रिया है तथा दूसरा शब्द–विन्यास या रूप विधान : यह शब्दों के बनाने की पद्धति है। ब्राउन के अनुसार भाषा विकास के अध्ययन में व्याकरण के विकास का महत्वपूर्ण योगदान होता है। भाषा विकास की प्रथम अवस्था में बच्चा एक शब्द बोलना प्रारंभ करता है। इन शब्दों का उच्चारण प्रौढ़ शिशुओं के उच्चारण से भिन्न होता है। ब्राउन, कैजडेन तथा बेलॉगी (1969) के अनुसार बच्चा आदान–प्रदान के द्वारा भाषा शीघ्र ही सीख जाता है। मिलर, गैलेण्टर तथा पीब्रॉम (1060) के अनुसार, बच्चे को किसी का बोलने और समझने के पहले बार–बार उस भाषा का सुनना आवश्यक है।

सी0 एन0 हेनले (1956) के अनुसार बच्चे के भाषा विकास के दो सामान्य चर है : परिपक्वता और सीखना। अभी यह तक यह निश्चित नहीं हो पाया कि भाषा विकास के लिए परिपक्वता का कौन सा तत्व आवश्यक है। यद्यपि कि विकास को एक निश्चित अवस्था विकासोन्मुख बालक के लिए आवश्यक है। प्रायः बोलने की भाषा पर बच्चे का नियंत्रण स्कूल जाने से पहले हो जाता है और जिस बच्चे का बोलने की भाषा पर नियंत्रण नहीं है, वह साधारणतया अपनी सामाजिक और शैक्षणिक योग्यता में अपंग रह जाता है। बच्चा जितनी जल्दी भाषा की अभिव्यक्ति सीख जाता है। उतनी जल्दी ही वह अपने सामाजिक और बौद्धिक विकास में भाषा का उपयाग कर लेता है।

अध्ययन का उद्देश्य एवम् परिकल्पना :

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य निम्नांकित बातों की जानकारी करनी थी।

1. अर्थ किसी प्रकार सीखे जाते हैं।
2. शब्द किस प्रकार से वाक्याशों और वाक्यों का निर्माण करते हैं तथा शब्द किस प्रकार आकार ग्रहण करते हैं और विकसित होते हैं।

परिकल्पना :–

1- बालक तथा बालिकाओं के भाषा विकास पर आयु का प्रभाव सार्थक ढ़ंग से पड़ेगा।

2- बालक तथा बालिकाओं के भाषा विकास पर ग्रामीण तथा शहरी वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ेगा।

3- भाषा विकास पर लिंग का सार्थक प्रभाव पड़ेगा।

उपकरण :

1. अनुसूची
2. खिलौनें
3. पत्रिकायें एवं चित्र

न्यादर्श :

प्रस्तुत बच्चों के भाषा विकास के अध्ययन में तीन आयु समूह–2वर्ष, 4 वर्ष एवं 6 वर्ष के बच्चे रखे गये हैं। प्रत्येक आयु समूहों में 60 विषयी है। कुल विषयी की संख्या 180 हैं। यह अध्ययन मुजफ्फरपुर जिला के ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के बच्चों पर किया गया है। ग्रामीण क्षेत्र के 90 विषयी और शहरी क्षेत्र के 90 विषयी है। प्रत्येक आयु समूह में बालकों के एवं बालिकाओं की संख्या बराबर रखे नहीं हैं अर्थात 15 बालक एवं 15 बालिकायें।

साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण

वर्तमान अध्ययन के तथ्यों के संकलन के लिए जीन वर्को विधि के आधार पर साक्षात्कार अनुसूची के निर्माण की प्रक्रिया को पूरा किया गया। इसके लिए सर्वप्रथम विषयी के साथ आरंभिक परीक्षण खिलौनों एवं पत्रिकाओं के साथ किया गया। कई प्रयासों में कुछ समस्यायें सामने आई। जैसे खिलौन के प्रस्तुतीकरण में स्पष्ट एवं सरल प्रश्नों का होना आवश्यक लगा जिससे कि प्रश्न का सटीक उत्तर प्राप्त हो। दो घंटे के अध्ययन के लिए खिलौने एवं पत्रिकाओं के चित्रों की संख्या को पूर्व निर्धारित करना भी आवश्यक पाया गया। दो वर्ष के बच्चे बिना अभिभावक की उपस्थिति के ठीक से बातचीत नहीं कर पाते अतः अभिभावकों की उपस्थिति भी अनिवार्य पायी गयी। इन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए, विभिन्न आयु के बच्चों के लिए साक्षात्कार–अनुसूची का

निर्माण सामान्य, बातचीत, खिलौनों और पत्रिकाओं के चित्रों को ध्यान में रखत हुए किया गया। विषयी के उत्तरों की प्राप्ति हेतु प्रोत्साहन के लिए टॉफी वगैरह भी दिए गये।

निष्कर्ष :

उपरोक्त तथ्यों को देखने से ज्ञात होता है कि भाषा के विकास में आयु एक महत्वपूर्ण परिवर्त्य है। यह स्पष्ट हुआ कि प्रारंभिक आयु वर्गों में बच्चे एक स्वर तथा एक व्यंजन वर्णों का भाषात्मक उपयोग अधिक मात्रा में करते हैं। इस आयु वर्ग में क्रमशः संज्ञा, क्रिया, विशेषण, क्रिया विशेषण तथा सर्वनाम शब्दोंका भाषात्मक विकास होता है जिसमें संज्ञा शब्दों का उपयोग सबसे अधिक तथा सर्वनाम शब्दों का सबसे कम मात्रा में होता है। बाद के आयु वर्गों 4 एवं 6 वर्ष में संज्ञा और क्रिया शब्दों का भाषात्मक विकास बहुत ही धीमी गति से, विशेषण शब्दों का बहुत ही तीव्र गति से, क्रिया विशेषण शब्दों का कुछ कम तीव्र गति से तथा सर्वनाम शब्दों का लगभग दुगुनें गति से होता है। पूर्ण वाक्यों का भाषात्मक विकास आरंभिक आयु वर्ग की बहुत ही कम मात्रा में तथा बाद के आयु वर्गों में अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में पाया जाता है।

भाषा के विकास में यौन एक मुख्य परिवर्त्य है। प्रारंभिक आयु वर्ग में स्वर तथा व्यंजन वर्णों का भाषात्मक उपयोग बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में अधिक तथा बाद के आयु वर्गों में बालिकाओं की अपेक्षा बालकों में अधिक मात्रा में होता है। संज्ञा, विशेषण, क्रिया–विशेषण तथा सर्वनाम शब्दों का भाषात्मक विकास प्रत्येक आयु वर्ग में बालिकाओं में बालकों की अपेक्षा अधिक मात्रा में होता है जबकि क्रिया शब्दों के विकास कभी बालक बालिकाओं से तो कभी बालिकायें बालकों की अपेक्षा श्रेष्ठ होती है। प्र्ण वाक्यों के भाषात्मक विकास में बालिकायें प्रत्येक आयु वर्ग की बालकों से श्रेष्ठ होती है।

यह देखा गया कि आरंभिक आयु वर्ग में स्वर तथा व्यंजन वर्णों के उपयोग में शहरी बालिकायें, ग्रामीण बालिकाओं से श्रेष्ठ तथा बाद के आयु

वर्ग में निम्न होती है। संज्ञा, विशेषण, क्रिया–विशेषण तथा सर्वनाम शब्दों का भाषात्मक विकास प्रत्येक आयु वर्ग की शहरी बालिका में, ग्रामीण बालिकाओं से अधिक मात्रा में होता है। क्रिया शब्दों का विकास आरंभिक आयु वर्ग के शहरी बालिकाओं में, ग्रामीण बालिकाओं की अपेक्षा कम तथा बाद के आयु वर्ग में अधिक मात्रा में होती है। पूर्ण वाक्यों के भाषात्मक विकास में प्रत्येक आयु में शहरी बालिकायें ग्रामीण बालिकाओं से श्रेष्ठ होती हैं।

संदर्भ सूची :

1. एम्स, एल0बी0 एण्ड गेसेल, ए0: ''दि डवलपमेंट ऑफ हैन्डेडनेस, जर्नल ऑफ जेनेटिक साइकोलॉजी'', 1947,70, पृष्ठ 155–175.
2. एन्टीन्यूसी, एफ. तथा अन्य अर्ल लॉग्वेज डबलपमेंट, ए मोडेल एण्ड सम डाटा, न्यूयार्क, होट्स 1973.
3. बेलुगी, बी0 एण्ड ब्राउन, आर0 उब्ल्यू0 : ''दि प्रोडक्शन ऑफ ग्रामाटिकल केसेज, एक्टा सोशियोजीका'', 1971,14, 24–72.
4. भारत सरकार : चाइल्ड डवलपमेंट ए सिम्पोजियम, दिल्ली, 1964.
5. ब्रेने, एम0डी0एम0 : ''ऑन लर्निग दि ग्रामेटिकल आर्डर ऑफ वर्डस'' साइकोलॉजिकल रीव्यू, 1963, 70,323–48.
6. कारमाइकेल, एल0, : ''मैनुअल ऑफ चाइल्ड साइकोलॉजी'' 1970.
7. लाब्रान्ट, एल0 एल0, : ''ए स्टडी ऑफ सर्टेन लैंगवेज डवलपमेंट इन चिल्ड्रेन इन ग्रेट्स फोर टू ट्वेल्भ, इनक्लूसिभ'' जेनेटिक साइकालाजी मोनोग्राफ्स, 145, 1933,387–491.